अध्याय 1

HJI483

इतिहास के स्रोत

कक्षा के सभी बच्चे राजू के आस पास इकट्ठे थे। राजू उन्हें बता रहा था कि महारानी लक्ष्मीबाई की तलवार कितनी भारी थी और ढाल कितनी बड़ी थी। उसकी बातें सुनकर सभी चकित थे। राजू उस समय की बातें बता रहा था जब उसका जन्म भी नहीं हुआ था। आखिर राजू को इतने पुराने समय की बातें कैसे मालूम हो गई ? थोड़ी ही देर बाद राजू ने स्वयं बताया कि ये बातें उसे संग्रहालय या म्यूजियम में रखी वस्तुएँ देखकर मालूम हुई।

तभी गुरु जी कक्षा में आए। हर्ष ने उनसे पूछा कि, हम पुराने समय की बातें कैसे जान लेते हैं? अर्थात उसने इतिहास जानने के तरीकों के बारे में पूछा। गुरु जी बताने लगे –

इतिहास जानने के कई तरीके या स्रोत हैं जैसे–पुराने ग्रंथ, शिलालेख, खुदाई से प्राप्त अवशेष, स्मारक, भवन, बर्तन, औजार, हथियार, चित्र, सिक्के, एवं यात्रा संस्मरण।

गुरु जी को लगा कि बात को और सरल करने की जरूरत है इसलिए उन्होंने समझाया –

चित्र–1.1 सिंघनपुर की गुफा का शैल चित्र

देखो तुम्हारे घर या आस–पास में कुछ चीजें या पुराने जमाने के भवन होंगे उनके बारे में पता लगाओ वे कितने पुराने हैं? उनसे जुड़ी कुछ और बातें भी पता लगाओ। यदि तुम ऐसा करते हो, तो इसका मतलब है कि तुम उस समय का इतिहास जानने की कोशिश कर रहे हो।

सभी बच्चों ने सहमति में सिर हिलाया। राधा ने खड़े होकर कहा– गुरुजी अभी आपने इतिहास जानने के बहुत से तरीके बताए उनके बारे में विस्तार से समझाइए।

गुरु जी ने बतलाया, देखो राधा बहुत पहले लोग लिखना पढ़ना तो जानते नहीं थे। इसलिए वे चित्र बनाकर अपनी बातें कहते थे। तुमने छत्तीसगढ़ के रायगढ़ जिले में स्थित कबरा पहाड़ी और सिंघनपुर की गुफाओं के बारे में जरूर सुना होगा। खोजने से पता चला कि वहां पर बने शैलचित्र आदिमानव काल के हैं। जब मनुष्य लिखने लगा तो उसने अपनी बात पत्थर पर खोदकर कहीं जिन्हें हम शिलालेख कहते हैं। आगे चलकर भोजपत्र, ताड़पत्र, ताम्रपत्र तथा कागज आदि पर भी लिखा गया।

शिलालेख – पत्थरों (शिलाओं) पर खोदकर लिखी गई बातें।

स्तंभलेख – पत्थर,, लोहे या काष्ठ के स्तंभों (खंभों) पर लिखी गई बातें।

भोजपत्र,ताड़पत्र – विशेष प्रकार के पत्रों पर रंग या स्याही से लिखी गई बातें।

ताम्रपत्र लेख – तांबे के पत्रों पर खोदकर लिखी गई बातें।

HJRZ9Q

कई बच्चे एक साथ बोल पड़े–क्या हम पुराने समय के लेख देख सकते हैं?

गुरु जी ने उन्हें समझाया कि ये सभी चीजें संग्रहालयों में देखी जा सकती हैं। ये पाली या प्राकृत भाषा में लिखे गए हैं। यह लिपि अब व्यवहार में नहीं लाई जाती। इसलिए सभी लोगों के लिए इसे पढ़ना कठिन होता है। इतिहासकार और पुरातत्ववेत्ता इन लिपियों को पढ़ना जानते हैं जिसके कारण वे उस युग में क्या लिखा गया था, पढ़ कर हमें बता सकते हैं। "पुरातत्ववेत्ता" कई बच्चे बोल पड़े। हाँ, गुरु जी ने अपनी बात कहना जारी रखा। पुरातत्ववेत्ता वे होते हैं जो पुरानी बसाहटों को खोदकर उनके बारे में तथ्यों का पता लगाते हैं। तुम जानते हो कि कई वस्तुएँ धूल व मिट्टी की तह जम जाने से हमें दिखाई नहीं देतीं। इसी प्रकार कई पुराने भवन, नगर या वस्तुएँ भी बाढ़, आँधी, तूफान या भूकंप के कारण मिट्टी में दब जाती हैं। पुरातत्ववेत्ता उन्हें खोजकर एवं खोदकर फिर से दुनिया को उनके बारे में बताते हैं। इन पुराने अवशेषों से हमें उस समय के लोगों के रहन–सहन व जीवन के बारे में पता चलता है।

अंकिता ने पूछा– क्या पुराने भवन, महल, मंदिर किले आदि भी हमें इतिहास की जानकारी देते हैं।

गुरु जी ने बताया कि ये सब अपने समय की घटनाओं के जीते–जागते प्रमाण होते हैं। पुराने भवन हमको उस समय की भवन निर्माण कला की भी जानकारी देते हैं।

इसी प्रकार पुराने सिक्के, औजार, बर्तन, आभूषण और अन्य वस्तुओं से भी हम इस समय के लोगों के बारे में बहुत कुछ जान सकते हैं।

चित्र–1.2 ताम्रपत्रलेख

चित्र– 1.3 लक्ष्मण मंदिर सिरपुर

चित्र– 1.4 कुलेश्वर मंदिर, राजिम, छ.ग.

गुरु जी बताते जा रहे थे कि पुराने ग्रंथों से भी हमें उस समय के समाज, नगरों, रीति–रिवाजों की बहुत–सी जानकारी मिलती है। सपना ने कहा ग्रंथ, जैसे– रामायण, महाभारत, कुरान, गीता बाइबिल आदि।

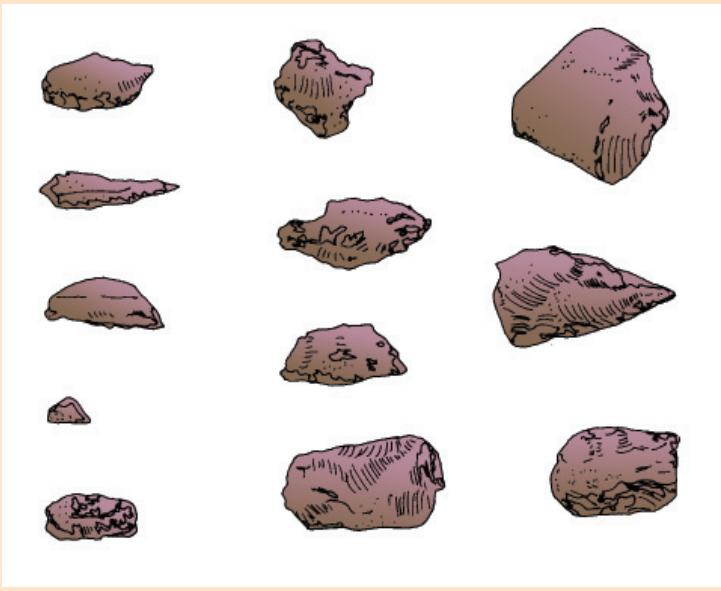

चित्र– 1.5 खुदाई से प्राप्त प्राचीन समय की वस्तुएं

गुरु जी ने हाँ कहा और आगे बताया– जैसे हम कहीं से घूमकर आते हैं तो सबको उन जगहों के बारे में और वहाँ के लोगों के बारे में बताते है। वैसे ही बहुत पहले कुछ विदेशी यात्रियों ने कई देशों की यात्रा की थी। उनके द्वारा लिखे गए यात्रा वर्णनों से उस देश के बारे में उस समय की काफी जानकारी मिलती है।

मोनू ने बताया कि उसने रायपुर के महंत घासीदास संग्रहालय में बिलासपुर जिले के किरारी गाँव से प्राप्त काष्ठ स्तंभ लेख को देखा है । गुरु जी ने समझाया कि कई प्राचीन वस्तुएँ भी हमें इतिहास की जानकारी देते हैं, जैसे घरों में कैसे बर्तन काम में लाए जाते थे, बाल सँवारने के कंघे कैसे होते थे, पहनावा कैसा होता था, क्या–क्या भोजन करते थे और उस समय किन–किन देवी–देवताओं की पूजा की जाती थी आदि ।

पुराने सिक्के व मुद्राएँ

किरारी ग्राम से प्राप्त
स्तंभ तथा लेख
संग्रहालय, रायपुर

चित्र– 1.6

इसके अलावा इतिहास हमें उस समय के राजा–महाराजाओं और छोटे–बड़े सभी लोगों के बारे में भी जानकारी देता है ।

स्वाति ने एक बहुत ही अच्छा प्रश्न किया कि ''हम इतिहास का अध्ययन क्यों करें''?

गुरु जी ने सभी को समझाया कि–हमें यह मालूम होना बहुत जरूरी है कि हम पहले क्या थे? वर्तमान को समझने के लिए भूतकाल की जानकारी होना जरूरी है।

इतिहास बड़ा ही रोचक और रोमांचक होता है। यह हमारे विकास की कहानी है। हम अपनी सभ्यता और संस्कृति के बारे में बहुत कुछ इतिहास पढ़कर ही जान सकते हैं। हम समझ सकते हैं कि हमारी आज की उन्नति के पीछे हमारा लंबा और महान अतीत छुपा हुआ है। जो हमें लगातार आगे बढ़ने में मदद दे सकती हैं ।

अभ्यास के प्रश्न

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

(अ) सिंघनपुर की गुफाएँ ———————— के पास स्थित है ।
(ब) जो पुरानी चीजों की खोज करते हैं उन्हें ———————— कहते हैं ।
(स) महंत घासीदास संग्रहालय ———————— में है ।
(द) कबरा की पहाड़ी पर बने शैल चित्र ————————काल के हैं।
(ई) किरारी गांव से प्राप्त ———————— ऐतिहासिक महत्व का है।

2. सही जोड़ी मिलाइए–

अ.	महाभारत	–	शैल चित्र
ब.	पाली	–	दुर्लभ वस्तुओं का संग्रह
स.	कबरा पहाड़ी	–	ग्रंथ
द.	संग्रहालय	–	शिलाओं पर खोदकर लिखी गई बातें
इ.	शिलालेख	–	प्राचीन भाषा

3. हाँ या नहीं में उत्तर दीजिए–

(अ) इतिहास में सिर्फ राजा महाराजाओं के बारे में ही अध्ययन किया जाता है । ( )
(ब) सिंघनपुर की गुफाओं के शैलचित्र आदिमानव काल के हैं । ( )
(स) ताँबे के पत्रों पर खोदकर लिखी गई बातें भोजपत्र कहलाती हैं । ( )

4. नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(अ) इतिहास किसे कहते हैं ?
(ब) इतिहास जानने के साधन क्या–क्या हैं ?
(स) प्राचीन लेख किन भाषाओं में लिखे गए हैं ?
(द) पुरातत्ववेत्ता किसे कहते हैं ?
(इ) हमें इतिहास जानना क्यों आवश्यक है ?
(फ) प्राचीन वस्तुओं से इतिहास की जानकारी कैसे होती है ?

योग्यता विस्तार

1. अपने आस–पास के किसी संग्रहालय का अवलोकन कीजिए और वहाँ देखी गई चीजों की सूची बनाइए ।
2. मुद्रा नहीं थी तब लोग आपसी लेन–देन कैसे करते थे ?